भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद, गुजरात

1. कृषि कार्यों के लिए स्वच्छता जागरूकता पर सलाह

1. कोरोना वाइरस (COVID 19) द्वारा महामारी फैलने के कारण, भारत सरकार ने अपने प्रभावी नियंत्रण के लिए देशव्यापी तालाबंदी / कर्फ्यू का आदेश दिया है। हालांकि, लॉकडाउन / कर्फ्यू की अवधि के दौरान किसानों और खेती के कार्य क्षेत्र के लिए दिशानिर्देश / छूट जारी की गई है, ताकि किसानों के खेती से सम्बन्धित कर्यों का संचालन और फसलों की कटाई जारी रखी जा सकें।
2. किसानों को सलाह दी जाती है कि वे किसी भी कृषि कार्य के दौरान COVID 19 के प्रसार को रोकने के लिए दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करें।
3. कुछ निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं का पालन किया जाना चाहिए:
   - साबुन, सैनिटाइजर या किसी कीटाणुनाशक के उपयोग से हाथ की बार-बार सफाई कराना।
   - खेती के काम में लगे किसानों के बीच दूरी(1.5 मीटर) बनाए रखना।
   - मुखौटे (मास्क) का उपयोग करना।
   - छोटे कृषि उपकरणों जैसे खुरपी, कुदाल आदि का आदान-प्रदान नहीं करना।
4. राज्य सरकार द्वारा भी खेती के कार्यों के दौरान स्थानिय भाषाओं में अलग-अलग दिशानिर्देश जारी किए गए हैं और किसानों को दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करने की सलाह दी गई है।
5. ईसबगोल, (प्लांटैगो ओवेटा), असालियो/चंद्रसुर (लैपिडियम सटाइवम), अश्वगंधा (विथानिया सोम्नीफेरा), अफीम (पापावेर सोम्नीफेरम) जैसी प्रमुख मौसमी रबी औषधीय फसलों की कटाई कार्य चल रहा है या होने वाली है। यद्यपि हाल ही में मार्च के तीसरे और चौथे सप्ताह में बारिश के कारण उत्तर भारत में कई फसलों की कटाई में देरी हुई है और नुकसान भी हुआ है।

2 किसानों को कटाई संचालन पर विशेष सलाह

कुछ औषधीय एवं सगंधीय पादपों प्रजातियों की कटाई की स्थिति नीचे दी गई है:-

राज्य	कटाई की स्थिति
गुजरात	**ईसबगोल :** 95 % से अधिक फसल क्षेत्र की कटाई हो चुकी है और केवल बहुत देर से बोई जाने वाली फसलों की कटाई होनी है। **असालियो :** 95 % से अधिक फसल क्षेत्र की कटाई की जा चुकी है और केवल बहुत देर से बोई जाने वाली फसलों की कटाई होनी है।
राजस्थान	**ईसबगोल :** बेमौसम बारिश से पहले 50% से अधिक की कटाई की गई है। यद्यपि, मार्च, 2020 के अंत तक बहुत देर से बोई गई फसल की कटाई हो रही है।

	अश्वगंधा : मार्च के अंत में बेमौसम बारिश के कारण इस फसल पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। अंतिम मार्च से अप्रैल के पहले सप्ताह तक फसल की कटाई हो रही है। **अफीम :** शुरूआती और समय पर बुवाई वाली फसल की कटाई की गई है। यद्यपि, देर से बोई गई फसलें अभी खेत में खड़ी है और अप्रैल के महिने में (पहला पखवाड़ा) कटाई की जाएगी। किसानों को सलाह दी जाती है कि बारिश के कारण कैप्सूल की बाहरी सतह पर कोई नमी नहीं होती तभी शुष्क मौसम होने पर तुरंत कटाई करें।
उत्तर प्रदेश	**अफीम :** बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि के दौरान तुफान के कारण फरवरी और मार्च में 40-50% फसल प्रभावित हो गई है और देर से बोए गए क्षेत्रों में कैप्सूल की कटाई (लांसिंग) नहीं की जा सकती। कैप्सूल की कटाई में देरी हुई है जो अप्रैल के पहले सप्ताह में शुरू होगी। किसानों को सलाह दी जाती है कि बारिश के कारण कैप्सूल की बाहरी सतह पर कोई नमी नहीं होती तभी शुष्क मौसम होने पर तुरंत कटाई करें। जहां कहीं भी बेमौसम बारिश या ओलावृष्टि से नुकसान के कारण कटाई (लांसिंग) नहीं की जा सकी, फसल की कटाई के लिए नारकोटिक विभाग के सुझाव का सख्ती से पालन किया जाए। **ईसबगोल :** फरवरी और मार्च के दौरान बेमौसम बारिश के कारण ईसबगोल फसल प्रभावित हुई है। मार्च के अंतिम सप्ताह से अप्रैल के पहले सप्ताह तक कटाई शुरू की जाएगी। **असालियो :** फरवरी और मार्च के दौरान बेमौसम बारिश के कारण असालियो फसल प्रभावित हुई है। अप्रैल के पहले सप्ताह में फसल की कटाई शुरू की जा सकती है। **अश्वगंधा :** मार्च के महिने में बेमौसम बारिश के कारण इस फसल पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। अप्रैल के पहले सप्ताह से अश्वगंधा फसल की कटाई शुरू की जा सकती है।
मध्य प्रदेश	**अफीम :** 90 % से अधिक फसल की कटाई की गई है और बीज की कटाई अंतिम मार्च या अप्रैल के पहले पखवाड़ा में की जाएगी। यद्यपि, जिन लोगों को देर से लाइसेंस मिला है उन्होंने देर से फसल बोई है और फसल अभी भी खेत में है। किसानों को सलाह दी जाती है कि बारिश के कारण कैप्सूल की बाहरी सतह पर कोई नमी नहीं होती तभी शुष्क मौसम होने पर तुरंत कटाई करें। लेटेक्स की कटाई (लांसिंग) शुष्क मौसम की स्थिति में किया जाना चाहिए। **ईसबगोल :** इस वर्ष भारी और अच्छी बारिश के कारण ईसबगोल का क्षेत्र कम है, किसानों ने अन्य वैकल्पिक फसलों का विकल्प चूना। लगभग सभी जगहों पर ईसबगोल की कटाई समय से यानी बेमौसम बारिश से पहले की गई है। कुछ जगहों पर बेमौसम बारिश के कारण बीज के बिखरने से पैदावार कम हो सकती है। **अश्वगंधा :** मार्च के महिने में बेमौसम बारिश के कारण इस फसल पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। अप्रैल के पहले सप्ताह से अश्वगंधा फसल की कटाई की जा रही है। **असालियो :** फसल एक सप्ताह के अंदर कटाई के लिए तैयार हो जाती है।
हरियाणा	**ईसबगोल :** बेमौसम बारिश के कारण ईसबगोल फसल प्रभावित नहीं हुई। मध्य अप्रैल 2020 के बाद इसकी कटाई की जा सकती है।
बिहार	बिहार में, कुछ जगहों पर फसल की कटाई पहले चरण में होती है। शेष क्षेत्रों में बिहार

	सरकार के द्वारा जारी किए गए पत्र संख्या 1626 दि. 26/03/2020 के निर्देशानुसार फसल की कटाई अप्रैल के पहले सप्ताह में शुरू होगी।
ओडिसा	**सर्पगंधा :** सर्पगंधा की जड़ों की कटाई पहले से दिसम्बर 2019 से फरवरी, 2020 के दौरान कर लिया गया। **लॉग पीपर :** यह लगभग 4-5 वर्ष वाली बहुवार्षिक फसल है। लॉग पीपर की 80% जड़ (पिपलामूल) और फल की कटाई की गई। शेष फसलों की कटाई 14 अप्रैल 2020 के बाद होगी। **लेमनग्रास :** फसल की अवधि 4-5 वर्ष होती है। प्रत्येक 75 दिनों में लेमनग्रास पत्तियों की कटाई और तेल का निष्कर्षण किया जाता है। यद्यपि, वर्तमान लॉकडाउन के कारण यह लगभग समाप्त हो गया है और 14 अप्रैल 2020 के बाद से ऑपरेशन शुरू होगा।
असम	असम में, औषधीय एवं सगंधीय पादपों की व्यावसायिक खेती बहुत छिट्पुट होती है और विभिन्न एजेंटों द्वारा ज्यादातर जंगलों से एकत्रित किए जाते हैं। यद्यपि, कुछ फसल जैसे लेमनग्रास, सिट्रोनेला, पचौली और खसखस कुछ जगहों पर व्यावसायिक खेती के रूप में उगाए जाते हैं। उपर्युक्त फसलों की कटाई ज्यादातर गर्मियों और केवल बारिश के महिनों में की जाती है। नवम्बर से फरवरी तक की अवधि में कम होती है। पिपली, होमाहोमालोमेना आदि जैसे औषधीय पादपों के लिए ऐसा ही है। मार्च से नए रोपण की शुरूआत करते हैं।
छत्तीसगढ़	बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि के कारण पारम्परिक फसलों की तुलना में औषधीय एवं सगंधीय फसलों जैसे लेमनग्रास, सिट्रोनेला, पामारोजा, एलोवेरा और खसखस आदि कम प्रभावित हुई है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग:

विभिन्न औषधीय और सगंधीय फसलों की कटाई संचालन के लिए किसानों को खेती के संचालन के लिए सलाह व स्वच्छता के प्रति जागरूकता पर संस्थान की वेबसाइट पर अंग्रेजी में 31.03.2020 को अपलोड की जा चुकी है।

विभिन्न औषधीय और सगंधीय फसलों की कटाई संचालन के लिए किसानों को खेती के संचालन के लिए सलाह व स्वच्छता के प्रति जागरूकता पर संस्थान की वेबसाइट पर हिन्दी में 06.04.2020 को अपलोड की जा चुकी है।